परिचय

बिन्ध्यखण्ड में क्या हिन्दुस्थान भर में सावन बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। बहिन भाई को राखी बाँधती है और भाई उसको कुछ देता है। असल में परम्परा उस राखी के डोरे द्वारा बहिन के सिर पर भाई की रक्षा का हाथ रखवा देने की है, जो कभी न हटना चाहिए। प्रति वर्ष सावन की पूनो को इस बन्धन की आवृत्ति होती है। जब कोई लड़की या स्त्री किसी ऐसे पुरुष को राखी बाँध देती है जो उसका भाई नहीं है, तब वह राखी उन दोनों के बीच में भाई-बहिन का सम्बन्ध स्थापित कर देती है और इस बहिन की रक्षा का भार उस भाई पर आ जाता है। अधिकांश पुरुष इस भार को पैसे दे दिवाकर सिर से उतार देते हैं। और करें भी क्या? इतनी राखियाँ हाथ में पड़ जाती हैं कि समस्या का हल परम्परा ने पैसे या चाँदी के दान द्वारा सहज कर दिया है।

परन्तु आवारा मेघराज की गाँठ में, राखी बँधने के समय पैसे न थे, अथवा, वह राखी बाँधने वाली अपनी बहिन को पैसों से बढ़कर कुछ और देना चाहता था,—और उसने दिया।

सन् १९४१ में झाँसी ज़िले के सकरार नामक गाँव में एक डाका पड़ा। वहाँ के निवासियों ने लाठी से बन्दूकों का मुकाबिला किया और मार-पीटकर डाकुओं को भगा दिया। गिरोह नामी सरदार शेरसिंह का था। गिरोह में एक आदमी था जिसने एक लड़की की रक्षा करने में अपने गिरोह का सारा उद्यम बिगाड़ दिया। बरवासागर में विख्यात धनी सेठ मूलचन्द पर सन् १९२२ में डाका पड़ा था। डाकुओं ने थाने को घेर

लड़की ने रात को कुएँ में गिरकर अपनी जान दे दी।

एक घटना मऊरानीपुर में सन् १९४२ में इसी प्रकार हुई थी—उसमें लड़की तो विवश अपनी सुसराल चली गई, परन्तु जिस सजातीय लड़के से उसका प्रेम हो गया था और जिसके साथ ब्याह नहीं हो पाया, वह घर से ऐसा निकला कि उसका कभी पता न लगा।

हमारे देश में शायद, इस तरह की दुखान्त घटनाएँ और अधिक न हों। इसी आशा पर, मैंने इन घटनाओं के मूल तत्वों को एक गाँव और एक समय में गूँथ दिया है और घटना को सुखान्त कर दिया है। एक भावना और भी थी—सावन के राखीबन्द भाई-बहिन की कथा को दुखान्त क्यों बनाया जाय?

मैं राखी की सुन्दर प्रथा के चिरकाल तक जीवित रहने का आकांक्षी हूँ। स्त्री को शीघ्र ही आर्थिक स्वतन्त्रता मिलेगी और स्त्री तथा पुरुष बराबरी पर आवेंगे, परन्तु स्त्री को सम्मान की दृष्टि से देखने का यदि यह एक अतिरिक्त साधन—रक्षाबन्धन—समाज में बना रहे तो क्या कोई हानि होगी?

कजरियों इत्यादि के जो गीत विन्ध्यखण्ड में प्रचलित हैं उनको मैंने ज्यों का त्यों रख दिया है। उनमें जो सजीवता हमारी ग्रामीण जनता पाती है वह मेरे—मैं छन्दकार हूँ भी नहीं—या किसी और के बनाए गीतों में शायद जनता न पाती।

कजरियों की पूजा के समय जो कहानी विन्ध्यखण्ड में स्त्रियाँ हँस हँसकर कहती हैं उसमें एक कुतूहल है और नरशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए कुछ खोज की सामग्री भी, इसलिए मैंने उसको भी दे दिया है।

इस नाटक को रंगमंच पर खेलने में यदि खेलने वालों को कोई कठिनाई उत्पन्न हो तो उसकी जिम्मेदारी मेरी, और यदि सुविधा जान पड़े तो वह खेलने वालों का कौशल होगा।

झाँसी
[illegible]

वृन्दावनलाल वर्मा

उपन्यास तथा 'हंसमयूर' 'राखी की लाज' 'पायल' 'बांस की फांस' 'मंगल सूत्र' 'फूलों की बोली' 'कचनार' 'नीलकंठ' 'काश्मीर का कांटा' और 'झांसी की रानी' नाटक एवं 'हरसिंगार' 'दबे पांव' और 'कलाकार का दण्ड' कहानी संग्रह लिखे हैं।

कहानी लिखने में वर्मा जी दक्ष हैं। शिकारी कहानियां भी आपने लिखी हैं। नारी-मनोविज्ञान के आप कुशल चितेरे हैं। आपके चरित्र-चित्रण में ऊबा देने वाली समानता नहीं—प्रस्तुत स्वाभाविक विभिन्नता उल्लेखनीय रहती है।

१९४८ में वर्मा जी ५९ वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। मऊरानीपुर के जन्मे हैं और झांसी के निवासी। एकान्त आपको अधिक प्रिय है। आपका अधिक समय अब भी एकांत में व्यतीत होता है और वहीं कुछ लिख पाते हैं।

—मंजरी से उद्धृत

बड़ी पुतलियाँ काला, नाक सीधी, छोटी छोटी मूँछें और हलकी दाढ़ी जिसके छोटे छोटे छल्ले रचे गये है। गले मे मालायें—रुद्राक्ष और लाल नीले काच के बड़े गुरियों की। हाथ मे लोहे के कड़े। भौहों के बीच मे तेल मे मथी हुई कालाच का आड़ा टीका और चौड़े मांग पर सिन्दूर का चकचका त्रिपुण्ड। कान में पीतल के बाले। उंगलियों मे लाल काच की जड़ी हुई पीतल की अंगूठियां और ताम के छल्ले। सिर पर गेरुए रंग का बड़ा साफा इस तरह बांधे हुए है कि सामने से लम्बे केशों की मोट झकती सी दिखलाई देती है। गेरुए रंग का लम्बा कुर्ता और उसी रंग की धोती। जूते देशी। कन्धे पर छोटी सी बंगी जिसके दोनों सिरों पर बांस की छोटी छोटी पेटियां। एक कन्धे से झोला भी लटक रहा है। जिस हाथ से बंगी साधे है उसमे लम्बी तूम्बी वाला दुनला महुअर बाजा लिये है और दूसरे हाथ मे एक मोटा डण्डा। बस्ती की ओर से, पक्की सड़क को छोड़कर, इसी कच्चे मार्ग पर एक मनुष्य 'साबनी' लिये हुये आ रहा है। साबनी का सामान—राखी, नारियल, मिठाई इत्यादि लिये हुये वह जंगल वाले गांव को जा रहा है सामने संपेरे को देखकर और असगुन समझ कर वह ठमठमा जाता है। संपेरा मुस्कराता है। वह मनुष्य और भी सहम जाता है। संपेरा उसके पास आकर खड़ा हो जाता है।]

सपेरा—राम, राम। क्यों ठहर गए भाई! कहां जा रहे हो?

नाई—जा रहा हूं—एक गांव को जा रहा हूं।

सपेरा—बैठो न इस पेड़ के नीचे। तमाखू पीलो। बस्ती कितनी दूर है?

नाई—यह रही पास ही। पहले यहां कभी नहीं आए क्या?

सपेरा—न।

[सपेरा बेंगी एक ओर रख देता है और बैठकर चिलम-तमाखू निकालता है। नाई भी उसके पास आ बैठता है। सपेरा

दियासलाई से आग बनाकर चिलम तैयार करता है। दोनों तमाखू पीते हैं।]

नाई—आप कहां से आ रहे हो?

सपेरा—गुरु गोरखनाथ के चेले मछन्दरनाथ, उनके चेले बवंडरनाथ, उनके मार्तण्डनाथ, उनके ....

नाई—नाथ जी, मैंने पूछा आप कहां से आ रहे हैं।

सपेरा—मैं गुरु गोरखनाथ के चेला-वंश में हूं। कलकत्ता, बम्बई, नागपूर, कानपूर, झांसी आंसी घूमता घामता आ रहा हूं। चाहे जैसे नाग के डसे हुये को चौकस चार घड़ी में गुरुमंत्र से अच्छा कर देता हूं। गड़ा हुआ धन दिखला देता हूं। भूत प्रेत बाधा को हटा सकता हूं। चाहे जैसी बीमारी छूमन्तर कर देता हूं। तुम कौन हो, कहां जा रहे हो?

नाई—मैं नाई हूं। एक गांव सावनी लिए जा रहा हूं।

सपेरा—सावनी क्या?

नाई—इसी साल हमारे गांव का एक लड़का उधर के गांव में ब्याहा है। लड़की वाले के यहां सावन का सामान—नारियल—राखी—[illegible], मेवा, मोगी, बताशे-बताशे—लिए जा रहा हूं। इसी को सावनी कहते हैं।

सपेरा—गांव में बड़े बड़े लोग बसते होंगे?

नाई—हां, हां, कई बड़े आदमी हैं।

सपेरा—सबसे बड़ा कौन है?

नाई—गंगाराम! जब से नया युग आया और लेन देन बंद हुआ है तब से गंगाराम अपना धन नहीं बढ़ा पा रहे हैं, वैसे उनके पास पुराना [illegible] गहना-पत्ता बहुत है। नामी लखपती हैं।

सपेरा—मैं गांव में जाकर अपना खेल और जादू का जोर दिखलाऊंगा। देखूंगा तुम्हारे गांव के बड़े आदमी क्या देते हैं?

नाई—आप तो कहते थे हम गड़ा हुआ धन देख सकते हैं। फिर आपको जादू दिखलाने की क्या जरूरत ?

सपेरा—हां, हां, देख सकते हैं, परन्तु अपने लिये नहीं। गुरु ने वर्ज रक्खा है। इसलिये देखकर भी हम पराया धन नहीं उखाड़ते।

नाई—आप कल रहेंगे ? हमारे यहां कल हाट लगेगी मेला जुड़ेगा। मैं भी कल सवेरे तक लौटकर आ जाऊंगा और आप का जादू देखूंगा। मैं आपको अच्छे घरों का पता ठिकाना दूंगा। मुझको सदा पेट में पीड़ा रहती है, आपसे उसका इलाज करवाऊंगा। आपका नाम क्या है नाथ जी ?

सपेरा—नागनाथ, सांपनाथ, मेघराज, बादलराज, हमारा नाम क्या ? पवन के साथ आते और चले जाते हैं।

नाई—मैं अब जाता हूं। कल आपसे अवश्य मिलूंगा। बासी में ठहरिएगा। बड़ा गांव है।

सपेरा—हम लोग रात को गांव में नहीं ठहरते, जङ्गल में डेरा डालते हैं। कल जङ्गल से गांव में आ जायगे, मिलेंगे।

[नाईका प्रस्थान। मेघराज पक्की सड़कपर आकर पुलकी ओर जाता है। पुल के पास से बासी गाँव उचाई पर दिखाई पड़ता है। मेघराज डंडे को बेंगी के सिरे पर सुतली से लटका लेता है और अपना 'मोहन बाजा' बजाता है। नाले के पेड़ों की झुरमुट से एक देहाती का प्रवेश। देहाती चेहरे पर ढाटी चढ़ाये हुये है। उसको देख कर मेघराज उनकी ओर घूमता है। देहाती उनके पास आकर ढाटी जरा उघाड़ता है]

मेघराज—(चौंककर जरा सा पीछे हटता है) सरदार !

सरदार—हां, मैं हां हूं। तुमसे एक बात कहना भूल गया था। पता लगाना गांव में कितने हथियार हैं, कैसे हैं, और जिन घरों में हथियार हैं,

वे घर एक दूसरे से कितने अन्तर पर हैं, विशेषकर उस घर से जिस पर हम लोगों को पहुँचना है।

मेघराज—बहुत अच्छा। और कुछ?

सरदार—और तो कुछ नहीं, केवल यह कि भङ्ग मत पीना और दूसरे सपेरों से मुठभेड़ हो जाय तो उलझ मत जाना।

मेघराज—कठिन है सरदार। तो भी प्रयत्न करूँगा।

सरदार—तुम्हारी इनाम और हमारे दल में तुम्हारी आगे की बढ़ती इसी सावधानी पर निर्भर है।

मेघराज—अभी आप मेरा विश्वास नहीं करते?

सरदार—विश्वास करते हैं तभी तो तुमको इस बारीक काम के लिए भेजा है।

मेघराज—यह मेरे मन की रचना है करके दिखाऊँगा।

सरदार—मेरे दल के [illegible] आने के पहले मैं स्वयं कल इस गाँव का एक चक्कर तुम्हारे साथ लगाऊँगा। सन्ध्या के पहले लौट आना। जाओ।

[सिपाही वेश वाला सरदार नाले के पेड़ों में विलीन हो जाता है और मेघराज सपेरा का बाजा बजाता हुआ राखी गाँव की ओर जाता है]

दूसरा दृश्य

[गाँव [illegible] के नीचे [illegible] निकली हुई चौड़ी सड़क। [illegible] के दोनों [illegible] नीम के पेड़। मकान इकमंजिले और दुमंजिले [illegible] पर [illegible] बच्चे [illegible] जाते हुए घूम रहे हैं। कुछ [illegible] से खेल रहे हैं। [illegible] की डालों पर झूला डाले [illegible] झूल रहे [illegible] झूले पर दो लड़कियाँ [illegible] और [illegible] चम्पा

माथे पर बिन्दी लगाए है साड़ी पहिने है और पैरों में पायल। गले में सोने के आभूषण। आयु लगभग १५ साल। गोरा रंग, आंखें बड़ी, आकृति सुन्दर। करीमुन्निसा भी लगभग इसी आयु की। गोरी और सुन्दर। करीमुन्निसा की साड़ी रंगबिरंगी, लहरियादार है। पैरों में छड़े। गले में भी कुछ गहने।]

दोनों लड़कियां—(सावन गाती हैं।)

एरी सखी सैंया जोगी हो गए,
हो गए मोरे महाराज, एरी सखी सैंया जोगी हो गए।
सावन की निस अंधियारी औ रिमझिम बरसत मेह,
भूम हरी सब हो गई रे बन में कूकत मोर।
सुनो सखी सैंया जोगी हो गए।

[गीत की समाप्ति पर मेघराज का महुअर बाजा बजाते हुए प्रवेश। उसके आते ही लड़के उसको घेर लेते हैं तथा स्त्रियां और लड़कियां झूला झूलना बन्द कर देती हैं। वह उन दोनों लड़कियों के निकट जाकर अपनी पेटिया उतार देता है और घूम घूम कर बाजा बजाता है। बाजा बजाते हुए वह उन दोनों लड़कियों को भी देखता जाता है। लड़के, लड़कियों और पुरुष स्त्रियों की भीड़ इकट्ठी हो जाती है]

करीमुन्निसा—चम्पी, देख तो मुआ। कैसी आंखें फाड़-फाड़ कर ताक रहा है।

चम्पा—तुम्हें देख रहा है करीमन वह, मुझको नहीं देख रहा है।

करीमन—टूसा दूंगी मुंह पर। देखती नहीं, अबकी बार तुम्हारे ऊपर कैसी पुतलियां ढलका रहा है।

चम्पा—उसका बाजा सुनो करीमन, उसका खेल देखो। आंखों से क्या सरोकार है?

[सोमेश्वर और चांदखाँ का प्रवेश। दोनों युवा। लगभग १९ वर्ष के। दोनों के रेख आ रही है, दोनों हृष्ट पुष्ट हैं। दोनों कुर्ता पैजामा पहिने है। सोमेश्वर चोटी रखाए है। चांदखाँ स्वभावत चोटी नहीं रक्खे है। सोमेश्वर के ओठ पर रेख केवल सिरो पर बनी कटी है। चोदखा की रेख के सिरे पतले और नीचे की ओर जरा झुके हुए हैं। उसकी रेख नाक के नीचे कतरे मे बनी हुई है। भीड को चीर कर ये दोनो सपेरे के पास आते हैं। सोमेश्वर को देखकर चम्पा करीमन के कन्धे के पीछे जरा सी ओट ले लेती है।]

करीमन—वे आ गए।

चम्पा—घर चले? शायद ये कुछ कह न उठें।

करीमन—वाह! ऐसा तमाशा छोडकर घर मे जा घुसे! क्या करेंगे? ये भी तो खेल देखने आए है। इसकी पेटी मे कोई अजगर होगा चम्पो।

मेघराज—(बाजा बन्द करके) खास गुरु मछन्दरनाथ, पुरन्दरनाथ, [illegible] के चेलो के घराने का हूं। चाहे जैसा साप बात की बात में पकड लूगा। [illegible] से उतारे [illegible] दूगा। मन्त्र से बीमारियो को अच्छा करता हूं। जैसे [illegible], बुखार, [illegible], [illegible] आधासीसी, दमा सब [illegible] मिनटों में दूर करता हूं।

सोमेश्वर—और क्या क्या कर सकते हो?

(सोमेश्वर और चम्पा एक दूसरे को देखते है)

मेघराज—[illegible] राजी चाहें पूरी करा [illegible]

[illegible]

साप हो तो बतलाओ। चाहे जैसा भुजङ्ग हो, अभी पकड़ लाऊं।

चॉदखॉ—तुम्हारे लिए सांप क्या नचाना करें ? कोई बढ़िया से खेल दिखलाओ।

मेघराज—बहुत अच्छा।

[मेघराज गुठली मे आम का पौधा जिसमे आम लगे हुए हैं, दिखलाता है। सरसों मे सरसो के पौधे, मूली के बीच मे मूलिया और इसी प्रकार की चीजे निकाल कर दिखलाता है।]

सोमेश्वर--यह सब हाथ की सफाई है। कोई जादू टोना नहीं है।

मेघराज—करके दिखलाइए तब जानूॅ।

चॉदखॉ—करके भी दिखला सकते हैं, नाथ जी। हमारे बामी गाव को साधारण देहात न समझना। यहा पढे लिखे स्त्री पुरुष भी रहते हैं जो नाना प्रकार के खेल कूद करते रहते हैं।

मेघराज—तो मेरा ऐसा खेल देखिए जिसको देखकर बड़े बड़े पढे लिखे स्त्री पुरुष भी दङ्ग रह जाय—अचम्भे मे डूब जाय। बुलाइए ऐसे देखने वालों को।

सोमेश्वर—बहुत से खड़े हैं। आरम्भ करो और इनाम लो।

मेघराज—जितना बड़ा और बढिया खेल मै दिखलाऊगा, इनाम में देने के लिए उतने पैसे आपके गाव में न होगे।

चॉदखा—गाव मे तो नाथ तुम्हारी तौल का सोना एक ही घर मे होगा। क्या खेल है, जरा मै भी सुनूॅ ?

मेघराज—आपके गाव में कितनी बन्दूके हैं ?

चॉदखा—कई हैं। बोलो, काहे के लिए चाहिए ?

मेघराज—पहले उनकी गिनती बतलाइए, फिर कारण मै बतला दूँगा। खेल के लिए चाहिए, अपने जादू का प्रभाव दिखलाऊगा।

चॉदखा—हमारे गाव मे पाच बन्दूके हैं। बोलो, उनका क्या खेल खेलोगे ?

चम्पा—करीमन, चन्दू भैया शायद स्वयं बन्दूक चलावेंगे। यह बिचारा मारा जायगा और सब लोग पकड़े जावेंगे। मुझसे तो यह खेल नहीं देखा जायगा। चलो घर चलें।

करीमन—घर कौन कोस दो कोस पर है। जब चाहेंगे चार डग नहीं जा पावेंगे? वृथा भय खा रही हो, जरा देर देख भी लो। ऐसा अनोखा खेल तो न कभी देखा और न सुना।

(बन्दूकें लिवाए हुए चाँदखाँ और सोमेश्वर का प्रवेश)

मेघराज—खाली हैं या भरी हुई ? देखूं।

चाँदखाँ—खाली हैं।

(मेघराज एक एक करके बन्दूकों की जाच करता है।

मेघराज—आपके यहा कल मेला भरेगा ?

सोमेश्वर—हां।

मेघराज—बहुत भीड़ भाड़ होगी ?

सोमेश्वर—हां।

मेघराज—कबतक रहेगी ?

सोमेश्वर—भुजरियों के खोटने के बाद संध्या के पहले मेला तितर बितर हो जायगा।

मेघराज—तब इस खेल को कल अधिक लोगों के सामने दिखलाऊँगा। (मुस्कराकर) मरना ही है तो बहुत लोगों के सामने क्यों न मरूँ ? यदि बच गया तो पैसे भी कल बहुत मिलेंगे।

चाँदखां—आ गए न टाला टूली पर ! यदि ऐसा ही था तो बन्दूकें क्यों मगवाईं !

मेघराज—(हँसकर) यह देखने के लिए कि किस बन्दूक से कैसी गोली छूटेगी।

चादखाँ—(कुछ चिढ़कर) मुफ्त में परेशान किया।

मेघराज—(मुस्कराकर) सोचिए तो साहब, संसार में ऐसा कौन

होगा जो [illegible] के लिए आसानी से अपना खोपड़ा चटकवा दे ? [illegible] कल आऊँगा—कल अपना पूरा खेल दिखलाऊँगा। पैसे तैयार रखिएगा।

चम्पा—बहुत रेवड़ी मत माँगो तो नुकसान उठाओगे, नाथ।

मेघराज—हम लोग भिखमङ्गों की तरह घिघिया-घिघिया कर पैसा नहीं कमाते।

(दौड़ते हुए एक बालक का प्रवेश)

बालक (हाँफते हुए) बालाराम दादा के यहाँ कोठे में एक बड़ा भारी काला साँप आगया है !

(चम्पा चीखती है)

मेघराज—मैं देखता हूँ। घबराओ मत। उसको मारना नहीं मैं पकड़ता हूँ। (आँख मूँदकर ऊपर की ओर मुँह करता है और एक क्षण के लिए ओठों को बिरबिराता है) जय गुरु की। एक घड़ा लाओ।

(एक बालक जाकर मिट्टी का घड़ा ले आता है और मेघराज को देता है)

मेघराज—[illegible] घर दिखलाओ। भीतर कोई साथ मत आना।

[illegible] पल भी [illegible] फूला जाते थी।

[मेघराज अपनी पेटियों के सामान को यथावत् रखकर घड़ा [illegible] बालाराम के घर में जाता है और साँप को [illegible] जाता है। जैसे ही मेघराज घड़े [illegible] हुए साँप के फन को दिखलाता [illegible] है। मेघराज साँप को घड़े से [illegible] कर देता है [illegible] और [illegible] पेटी में बन्द कर देता है]

मेघराज—(चाँदखाँ और सोमेश्वर से) लोग अपने माल को अपनी ही भाषा में बखान कर अच्छे दामों में बेचते हैं। मैं अपनी कठोर सौदा को यदि ठेकेदारी की भाषा में बखानता हूँ तो क्या बुरा करता हूँ? (मुस्कराकर) आप मेरा सिर भञ्जन करने के लिए बन्दूकें उठा लाए और मैने इनाम का ठीक ठहराव तक नहीं किया!

सोमेश्वर—तुमने साप पकड़ने में विलक्षण चतुराई और हिम्मत की, पर

चाँदखाँ—पर बन्दूक के मामले में चतुराई या हिम्मत काम न देगी। पोल खुलकर ही रहेगी।

मेघराज—(हँसकर) कल देखिएगा। मेले में पुलिसवाले भी आयेंगे?

चाँदखाँ - शायद आवें। क्यों? उनका कोई डर है?

मेघराज—(मुस्कराकर) बिलकुल नहीं। मैं उनको लिखकर दे दूंगा कि यदि बन्दूक के खेल में मारा जाऊँ तो आप लोगों का कुछ न बिगड़े। वे लोग क्या यहीं रुकेंगे।

चाँदखाँ नहीं। मेले के खतम होने पर वे लोग भी चले जायँगे। क्यों?

मेघराज -वैसे ही पूछा। अब मैं बस्ती में घूमकर लोगों को नाग के दर्शन करा आऊँ। मुझको यहां के खेल की इनाम मिलनी चाहिए। वह देखो लोग मुँह चुराकर खिसकने लगे।

[सोमेश्वर, चाँदखाँ इत्यादि उसके कपड़े पर पैसे डालते हैं। पैसे कई रुपए के हो जाते हैं। मेघराज उनको इकट्ठा करके बस्ती के भीतरी भागों में जाने को होता है।]

सोमेश्वर—ये बन्दूकें जहां की तहां पहुंचादो।

चाँदखाँ—चलो।

नाई—चलिए नाथ जी, मैं आपको ऐसे घर दिखाऊँगा जहां आपको बहुत पैसे मिलेंगे।

[मेघराज बेगी पर पेटियाँ लादे बाजा बजाता हुआ बस्ती के भीतर जाता है। साथ में वह नाई और मुँह बनाते चिढ़ाते बालक इत्यादि। दूसरी ओर से चाउखा और सोमेश्वर का प्रस्थान]

करीमुन्निसा—चन्दू दादा उस बिचारे से नाहक उलझ गए। पेट के लिए लोग तरह तरह की बातें करते ही हैं। मैं जानती थी कि बन्दूक चलाने की बारी नहीं आवेगी। कोरा हँसी-ठट्ठा था।

चम्पा—मैं तो डर गई थी। और, जब उसने इतना बड़ा साँप पकड़ा तब तो मैं बेसुध ही होगई होती। चलो फूला फूले। बड़ा वीर है वह नाथ।

करीमुन्निसा—चलो।

तीसरा दृश्य

[स्थान—जंगल, बस्ती से लगभग चार मील दूर। समय चौथा पहर। दस बारह मनुष्यों का तलवारें बन्दूकें लिए हुए प्रवेश। इनके चेहरे खुले हुए हैं। कपड़े ग्रामीण पहिने हैं। आयु २० और चालीस के बीच में है। इन लोगों में वह सरदार भी है जो मेघराज को नाले के पास झुरमुट में मिला था। दूसरी ओर से मेघराज का प्रवेश। वह अब भी गेरुए कपड़े पहिने है और पहले जैसा त्रिपुण्ड लगाए है। परन्तु पेटा या बाजा नहीं लिए है।]

मेघराज—[illegible] कठिनाई से आ पाया हूँ। जिस [illegible] निकले थे लिए बड़ा था इसने [illegible] कुछ पकड़ आए हैं।

सरदार—[illegible] हुए देख, इसलिए [illegible]

मेघराज—[illegible]

तो सामान लाने के लिए लौट पड़ा। भटक गया। याद नहीं पड़ता सामान कहां रख दिया था। पांच-छः रुपए के पैसे थे। सब गए।

सरदार—कोई बात नहीं। बहुत हो जायगा। ग्रामी का समाचार सुनाओ।

मेघराज—ग्रामों मे धन-सम्पत्ति वाले कई घर हैं। उनमें [illegible] लम्बरी है। सड़क के किनारे ही रहता है। इसके पास ही एक मुसलमान की गृहस्थी है। वह भी धन वाला है। गांव में पांच बन्दूकें हैं—दो कारतूसी तीन टोपी दार। उनमें से चलिया कोई नहीं। पांचों बन्दूकें एक ही मुहल्ले में पास पास के घरों में हैं। स्त्रियां और लड़कियां शृङ्गार और गायन [illegible] करती हैं। पुरुष कुछ ढीलेढाले से जान पड़े। कल मेला है। पुलिस वाले भी आयगे।

सरदार—स्त्रियां कब तक गाती रहेगी? पुलिस वाले किस थाने से आयगे?

मेघराज—यह मैंने नहीं तलाश किया। स्त्रियां आठ नौ बजे रात तक गा बजा कर सो जायगी। पुलिस वाले अपने थाने को लौट जायगे।

सरदार—यह भी काम की बात थी, ढूंढ खोज करनी चाहिए थी। गांव की गलियां देख ली?—कहां से किस ओर जा सकेंगे यह खूब समझ आए।

मेघराज—गलियां तो सब देख लीं और शायद यह भी बतला सकता कि कौन गली किधर गई है।

सरदार—शायद! तुमको पूरा भरोसा नहीं है। तुम अपने सामान के रखने की ही जगह भूल गए फिर गलियां और वे घर कैसे तुमको याद रहेंगे?

मेघराज—बात यह है सरदार कि मैं अपना भेष दिखलाता फिरता था। [illegible] दी जाती थी कि ध्यान चट पट जाता था। [illegible] पन्ना का पुरवा है।

सरदार—बीच बीच में वहां की स्त्रियों को भी ताकते जाते थे ? (हंसता है)

मेघराज—झूठ नहीं बोलूंगा। उनका गहना और सौंदर्य देख लेता था। देशदेशांतर में घूमने और नए नए चेहरे देखने के लिए मैंने [illegible] का पेशा और यह [illegible] जीवन अपनाया है।

सरदार—अब हमारा जीवन भी देखो। अच्छा लगे तो रम जाना। हमारे साथ इतने थोड़े आदमी देखकर चिन्ता मत करना। और बहुत हैं जो [illegible] सीटी बजाते ही आ कूदेंगे।

मेघराज—अब क्या करना है ?

सरदार—कल दोपहर के लगभग मैं सपेरे के वेश में [illegible] चलूंगा। तुम्हारा तालाब पर भीड़ में कजरियों के वक्त मिलूंगा। गांव को खूब देखभाल लूंगा। [illegible] के पहले ही लौट आयेंगे। फिर इन सब को एक नये ढंग से [illegible] दस बजे रात को धावा बोलेंगे।

मेघराज—ये सब लोग क्या आप के गांव के हैं ? कौन हैं ? इनके नाम क्या हैं ?

सरदार—यह सब अभी नहीं जान सकोगे। जब हम लोगों में हिल-मिल जाओगे तब जान लोगे। अभी तो इन लोगों के नाम सोम, मङ्गल, बुध इत्यादि अठवारे के दिनों में याद रक्खो।

(वे लोग मुस्कराकर सिर हिलाते हैं।)

मेघराज—(जरा अचम्भे से) सोम, मङ्गल, बुध ! शनिश्चर कौन है ?

सरदार—(गम्भीरता पूर्वक) मैं स्वयं हूं। अब इन पहाड़ियों, चोटी [illegible] मिलेगा। यहां [illegible] आने भी [illegible] नहीं है।

मेघराज—[illegible] लगता हूं। (एक ओर प्रस्थान) दूसरी ओर से [illegible]।

चौथा दृश्य

[स्थान—चासी गाव के बीच मे निकली हुई चौड़ी सड़क। उसके दोनो ओर मकान। एक ही सतर मे नाथूराम और चांदमल के मकान। नाथूराम के मकान का दरवाजा खुला है, चांदमल का बन्द है। सड़क पर से स्त्री पुरुष जल्दी-जल्दी आते जाते है। सावन का दिन है इसलिए अपनी-अपनी धुन मे व्यस्त है। नाथूराम के मकान की ओर से सोमेश्वर का प्रवेश। समय लगभग ग्यारह बजे दिन।]

सोमेश्वर—नत्थू, ओ नत्थू। क्या कर रहे हो?

नाथूराम—खाना खा रहा हूँ। आया। ठहरना।

[नाथूराम के दरवाजे के किवाड़ कुछ बन्द होने को होते है, एक हाथ किवाड़ के पल्ले पर रक्खे हुए और दूसरे मे राखिया लिए हुए चम्पा दिखाई पड़ती है।]

सोमेश्वर—(इधर उधर देखकर, धीरे से) नमस्ते।

चम्पा—(जरा आख चढ़ाकर परन्तु मुस्कराते हुए) नमस्ते। [illegible]। क्या बात है?

सोमेश्वर—[illegible] तो देखा भी नहीं जाता। [illegible] तुम [illegible] क्यो पड़ने लगी थी?

चम्पा—[illegible] भीतर। [illegible] मत [illegible]। कोई क्या कहेगा?

सोमेश्वर—[illegible] मै पागल हो गया हूँ। [illegible] तो [illegible]?

चम्पा—[illegible] हा— कदाचित न।

सोमेश्वर—[illegible] भी [illegible] कदाचित् हा—कदा-[illegible]

चम्पा - (मुस्कराकर) बड़े मुँहज़ोर हो।

सोमेश्वर —(मुँह पर हाथ रखकर ज़ोर से) चन्दू भैया हो, चन्दू भैया हो!

चम्पा —(हँसकर) मेरी तो नाक में दम करदी।

चोदखा—(भीतर से) यार मेरे क्यों जान खाए जाता है? आता हूँ भोजन समाप्त करके। ठहर भी जा जरा। यह शंख मत फूँक।

सोमेश्वर—(धीरे से) एक की नाक में दम कर दिया! दूसरे की जान खाए जा रहा हूँ। अब क्या करूँ?

चम्पा—तुम यहाँ से नहीं हटते तो मैं जाती हूँ। (चम्पा किवाड़ों को जरा और बन्द करती है, परन्तु दोनों पल्लों के अन्तर से उसको देखती है।)

सोमेश्वर—सवाल यह है—मैं एक ही ठौर पर अडिग खड़ा रहूँ, या टहलता रहूँ?

चम्पा—(धीरे से) बड़े हठी हो। साँझ को कजरियों में मत आना। (धीरे से किवाड़ बन्द कर लेती है।)

(चोदखा का प्रवेश)

चोदखा—तुमने तो चिल्ला चिल्लाकर आफत ही कर दी।

सोमेश्वर—नाक में दम! जान खाली! आफत करदी! और कुछ?

चोदखा—(हँसकर) और यह सवाल क्या कर रहे थे? अडिग खड़ा रहूँ या टहलता रहूँ? मैंने तो ठहरने को कहा था—चाहे जैसे ठहरते।

(दूर राहट को दबाए हुए राखी लिए चम्पा बाहर आती है। [illegible] समय [illegible] सुस्मिता अपने घर से निकलती है।)

सोमेश्वर—चम्पा, दो राखियाँ [illegible] दो। कहीं तो फिर हो। [illegible] क्या? [illegible] जा रही हो।

[illegible] देना। (हँसकर [illegible] को [illegible])

[एक ओर से मेघराज का प्रवेश। वेशभूषा पहले दिन जैसी, परन्तु बेगी, पेटी या बाजा नहीं लिए है। वह चम्पा की ओर देखता है। चम्पा दृष्टि हटा लेती है।]

करीमन—आओ सोनू दादा तुमको राखी बाधूं गी।

सोमेश्वर—बाध दे बहिन, परन्तु मिठाई नारियल कुछ नहीं! कोरी राखी! मुफ्तखोरी कहीं की।

करीमन—हूं, ऊ! जैसा भाई तैसी बहिन।

(करीमन सोमेश्वर को राखी बाधती है और फिर चॉदखॉ को भी। दोनों उसको हाथ जोड़ लेते है।)

सोमेश्वर—मॉगे की राखी की दक्षिणा एक पैसा है, करीमन।

(करीमन और चॉदखा हसते है)

करीमन—चम्पा, तुम क्यो खड़ी हो? ऐसे खड़े रहने का पैसा [illegible]।

[चम्पा चादखॉ की ओर बढती है। सोमेश्वर बगले झाक कर पीछे हटता है। चम्पा जरा घबराहट के साथ सोमेश्वर की ओर [illegible] देखती हुई चादखा को राखी बाधती है। सोमेश्वर की जगह [illegible] मेघराज आ खड़ा होता है। सोमेश्वर और पीछे हट जाता है जहा मार्ग पर लोग आ जा रहे है। चादखा चम्पा के हाथ जोड़ लेता है। चम्पा परवश सी मेघराज की ओर आती हुई उसके हाथ की ओर राखी बढ़ाती है। मेघराज का चेहरा तुरन्त [illegible] हो जाता है, वह [illegible] जाता है और अपना दाया हाथ आगे बढ़ा देता है। चम्पा नीचा सिर किए हुए उसको राखी बाध देती है। सोमेश्वर और पीछे हटता है। मेघराज मस्तक नवाकर [illegible] है। दोनो के माथो पर पसीने की बूंदें [illegible] है।

मेघराज—[illegible] धर्म की बहिन हुई!

(चम्पा सिर उठाकर उसको जागा सा देखकर आंख नीची कर लेता है)

करीमन—सोनू दादा खिसक से क्या रहे हैं ? चम्पी, बांध दो उनको राखी ।

(सोमेश्वर और पीछे हटता है)

चम्पा—अब मैं किसी को राखी नहीं बांधूगी, खाना खाकर आती हूँ, करीमन । सांझ को कजरी में चलेंगे

(चम्पा का आतुरता के साथ प्रस्थान)

चांदखां—विचित्र लड़की है यह !

(सोमेश्वर लौट पड़ता है और चांदखां के पास आ खड़ा होता है)

चांदखां - सोनू, पैसे बचाने का अच्छा यत्न किया तुमने । पीछे हट गए !

(करीमन सोचने लगती है)

सोमेश्वर—नहीं तो, वह एक बात करने लगा था, कहिए आज ... बारूद वाला खेल ?

सोमेश्वर—मेला भी है।

करीमन—मैं चम्पा के पास जाती हूँ।

सोमेश्वर—चलो हम लोग बस्ती में चलें।

(करीमन चम्पा के घर जाती है। वे सब दूसरी ओर चले जाते हैं)

पांचवां दृश्य

[स्थान—झांसी के तालाब का बँध। गाव एक ओर उचाई पर है। दूसरी ओर दूर तक तालाब फैला हुआ है। तालाब की [illegible] पर धान, ज्वार, मक्का इत्यादि के खेत और इधर उधर छोटा नाला टोरिया तथा ढालू मैदान भी है। ताल के बँध पर स्त्रियां कजरियों का परिक्रमा दे देकर खोंटती हैं। जिन दोनों की [illegible] टूट चुकी हैं उनको जल में सिराती जाती हैं। छोटे छोटे लड़के बांसुरी बजाते हुए घूम रहे हैं। कुछ पुरुष भी घूम रहे हैं। दलान की स्त्रियां हिंडोलों में झूल रही हैं। मेले में दूकानें लगी हुई हैं। पांच पुलिस वाले बन्दूकें लिए हुए इधर उधर दूकानों पर चीजें [illegible] रहे हैं। भीड़ में एक ओर से सोमेश्वर, चांदखां का साथ साथ और पीछे पीछे, 'शनिश्चर सरदार' का प्रवेश। दूसरी ओर से भीड़ में से चन्दन आता है। पीछे में कजरियों के दौने सिरपर रक्खे हुए कुछ स्त्रियां और बालिकाएं आती हैं। इनमें चम्पा और करीमुन्निसा भी हैं। इन सबका गाते गाते प्रवेश।]

(गीत)

(दोनों लड़कियां कजरियां खोटती है। स्त्री पुरुष इधर उधर घूमते हैं)

करीमन—(धीरे से) चम्पी तुमने सोमू दादा को राखी नहीं बाधी थी। क्या कारण था ?

चम्पा—(सिर नीचा किए हुए) कारण कुछ नहीं था। बाधी ही नहीं।

करीमन—तो अब कजरी देना। दोगी न ? मै दूँगी।

चम्पा—तुम देना। देखो करीमन वह नाथ आ गया। राखी बाधने से भाई हो गया, (हँसकर) पर उसके पास दक्षिणा के लिए कुछ न था।

करीमन—सोमू दादा को कजरी देना, मै सब कबूल करवा दूगी।

चम्पा—मैं नहीं दूगी, नहीं दूँगी। मै तो अपने मन का करूँगी।

करीमन—सच सच बतलाओ क्या बात है ?

चम्पा—तुमको कजरी की कहानी मालूम है ?

करीमन—कैसी ? कौनसी ?

चम्पा—वह जो कजरी को घर से बाहर तालाब की ओर ले जाने के पहले घर घर मे कही जाती है।

करीमन—क्या है—कहो ?

बनाऊँ। जिठानी ने फुसलाकर उत्तर दिया कि गायों की सार में नितम्बों के बल बैठकर उन्हीं की छाप कुटिया पर लगा दो। देवरानी ने वैसा ही किया। फिर होम धूप करके खाने पर चिपट गई। कहने लगी, नवमी को बोया और उसी दिन काटा खाया। कुटिया में से कोई बोला, दसवीं को क्या बोया क्या काटा? खापीकर देवरानी ने जिठानी को बोलने वाली कुटिया का हाल सुनाया। वे दोनों कुटिया के पास आईं। जिठानी ने देवरानी से पूछा, 'देवरानी तुमने नवमी को क्या खाया?' देवरानी बोली 'मैं तो उपासी हूँ, कुछ भी नहीं खाया।' जिठानी ने कुटिया से सवाल किया, 'बोलो कुटिया।' कुटिया ने उत्तर दिया, 'मैंने दसवीं को बोया और काटा खाया।' और, देवर कुटिया में से निकल पड़ा। देवरानी लज्जित हुई। उसके पति ने हँसकर कहा, 'आगे से उपवास न रक्खा करो और सच बोला करो।'

हीरामन—(हँसकर) तुम उपवास रक्खा करो और सच न बोला करो। समझीं चम्पी?

चम्पा—(मुस्कराकर) वाह! कहानी का क्या यह अर्थ है?

हीरामन—तब चलो, कारी बातें। (मुट्ठी तानकर) फिर कभी [illegible]। मन में तुम्हारी [illegible] क्यों करूँ।

(दोनों उस स्थान पर पहुँचते हैं जहाँ आगे पीछे चालदा, [illegible] और सोमेश्वर खड़े हैं। चम्पा सोमेश्वर को संकेत करती है)

सोमेश्वर—[illegible] और तालाब में चाँद [illegible] करने के लिए किसी [illegible] आया हूँ।

(जाने को उद्यत होता है)

हीरामन—[illegible] दादा, [illegible] आओ।

सोमेश्वर—(आँखें [illegible]) [illegible]।

[[illegible] देता है। वह लौटकर हाथ जोड़ता है

और आँखों से लगा लेता है, इतने में चम्पा पीछे हटती है। करीमन चाँदखाँ को कजरी देती है और चम्पा कतरा कर पहले मेघराज को फिर चाँदखाँ को देती है। सोमेश्वर तबतक वहाँ से चला जाता है।]

करीमन—सोमू दादा चले गये ? चम्पी तुमने उनको कजरी नहीं दी ?

चम्पा—वे तो चले ही गये।

करीमन—मैं ढूंढे लाती हूँ।

(चम्पा सहम सी जाती है)

चाँदखाँ—कहाँ भीड़ में जाती है ? गेरो अपने घर जाओ।

चम्पा—हम लोग चाँदमारी का तमाशा देखना चाहती हैं।

चाँदखाँ—तब एक तरफ जाकर देखो। भीड़ में मत जाओ।

(चम्पा करीमन को एक ओर खींच ले जाती है)

चाँदखाँ—ना। जी, निशाना लगाओगे।

मेघराज—अवश्य, और, मेरे ये साथी भी लगायेंगे यदि आपने आज्ञा दी तो।

(सरदार आगे बढ़ता है)

चाँदखाँ—इनका नाम ?

मेघराज—इनका नाम सतीश्वरनाथ है।

चाँदखाँ—सतीश्वरनाथ ?

एक कहता है—चाँदखाँ का निशाना सिरे का रहा।

दूसरा कहता है—नाथ का निशाना भी बहुत बढ़िया रहा।

(नर्तकियों का प्रस्थान। लड़कियां कजरी बांटती हुई घर जाती हैं)

[पुलिस के पाचों सिपाही मेघराज और सरदार के साथ आते हैं। सब अपने साफों मे कजरिया खोसे हैं।]

सरदार—हम तो अब बूटी छानेंगे। आप लोगों को चले तो निकालूं ? बादामों वाली है।

सिपाहियों का जमादार—हां हां क्यों नहीं ? ज्यादा देर हो गई है इसलिए थाने को लौट कर नहीं जायगे। यहां स्कूल के अहाते मे चैन से सोयेंगे। परन्तु थोड़ी थोड़ी ही खायगे, नाथ।

सरदार—हां थोड़ी सी ही लीजिये। हमको तो अभ्यास है, चाहे [illegible] चढ़ा जाय।

(सरदार भङ्ग की एक बड़ी गोली मुंह मे रख लेता है, और सिपाहियों को बांटता है)

एक सिपाही—अपने साथी को भी दो।

सरदार—यह भी [illegible] है।

सिपाही—[illegible]।

मेघराज—मैं बिलकुल नहीं लेता।

[ये सब झूम झूमकर कुछ अटपट और बेसुरे गाते हैं। सरदार अपने मुंह का गोला दूसरों की आंख बचाकर उगल देता और बेखबर झूमता है]

सरदार—[illegible] है ?

एक सिपाही—[illegible] है ?

तीन बन्दूके दागेगे। तुम लोग तुरन्त चतुराई के साथ नाले की ओर चल पड़ना। वहीं हम लोग मिल जायगे यदि उस मुहल्ले के लोग, खास तौर पर बन्दूक वाले लोग जाग पड़ें तो तुम लोग बाढ़ें दागना। उन लोगों को घर बाहर न निकलने देना। खबरदार!

[इनमें से बारह मनुष्य एक ओर चले जाते है। बालाराम के मकान के दरवाजे पर चार आदमियो को छोड़कर सरदार मेघराज और [illegible] को लेकर नीम के पेड के सहारे बालाराम के मकान मे [illegible] जाता है और भीतर पहुच कर पौर का दरवाजा खोल देता है। दरवाजा खुलने पर एक ओर पलङ्ग पर सोता हुआ बालाराम [illegible] पड़ता है। वह अधेड़ अवस्था का दुबला पतला मनुष्य है। दूसरे पलङ्ग पर चम्पा सोई हुई है। वह चादर से मुंह ढांपे है, [illegible] का ऊपरी भाग और केश दिखलाई [illegible] है।]

[illegible] (संकेत में मेघराज से धीरे से) [illegible]

बालाराम—(कांपकर और घिग्घी बंधे हुए गले से) चाभिया, चाभिया मेरे पास नहीं हैं।

सरदार—(भयानक स्वर में) तब खोपड़ा तोड़ा जाता है, तैयार होजा। (सरदार बन्दूक के घोड़े को खींचता है और बालाराम के सिर पर सुधियाता है)

बालाराम—(भयभीत, टूटे और बैठे स्वर में) चम्पी, बेटी चम्पी, चाभियां दे दे।

[चम्पा अचकचा कर चादर हटाती है और आगे सरकती हुई बिस्तर में बैठ जाती है। केवल सलूका पहिने है, ओढ़नी पीठ के नीचे है। अपने पिता की ओर देखती है और घबराई हुई दृष्टि से एक बार सरदार की आकृति को और फिर मेघराज को देखती है। मेघराज पर उसकी दृष्टि एक क्षण के लिए ठहरती है। उसकी कलाई पर राखी बंधी हुई है। मेघराज ने चम्पा का नाम सुनते ही बंदूक को उसकी सीध से हटाकर ऊपर की ओर कर लिया था। चम्पा के दृष्टिपात करते ही वह हिल जाता है और उसकी निगाह दायें हाथ पर बंधी हुई राखी पर जाती है जिसको दिनमें चम्पा ने बांधा था।]

मेघराज—(घबराकर) ओफ! बहिन [illegible]!

सरदार—([illegible]) [illegible]

[उसी समय पिछवाड़े को गली की दूसरी ओर से बन्दूकों के चलने की आवाज़ आती है]

मेघराज—(दृढ़ और ऊँचे स्वर में अपने साथियों को भय-भीत करने के उद्देश्य से) चलो, हटो यहाँ से। सरदार, तुम सब घेरे जा रहे हो।

(सरदार का साथी भागता है, परन्तु सरदार खड़ा रहता है)

मेघराज—(सरदार की छाती पर बन्दूक तानकर) हटो, नहीं तो तुम्हारी छाती फटती है।

सरदार—(पीछे हटते हुए) कपटी, अधर्मी। लड़की की आग में जले तेरा घर।

[[illegible] इतना सुनकर अपना दरवाजा खोलता है और लाठी लेकर घबराए हुए डाकुओं पर टूट पड़ता है। डाकू घबरा-कर [illegible] भागते हैं।]

[illegible] (अपना घर खुला हुआ छोड़कर लालाराम के घर की ओर भागता हुआ) [illegible] मैं आया। (भीतर [illegible])

सरदार निकलकर भागता है। चंदू का एक लठ उसकी पीठ पर पड़ता है परन्तु वह गिरता नहीं है और सड़क पर से नाले की ओर भागता है। कुछ डाकू लौट पड़ते हैं और सोमेश्वर द्वारा घायल किए हुए अपने दोनों साथियों को जल्दी से पीठ पर रखकर पिटते पिटते भागते हैं। भागते हुए मेघराज की पिंडली पर सोमेश्वर की लाठी का छोर पड़ जाता है। वह भी नाले की ओर भागता है। बस्ती में बन्दूकें बराबर चलती हैं और बस्ती वाले इकट्ठे होकर मुहल्ले के उस भाग वाले डाकुओं का पीछा करते हैं। वे डाकू भी नाले की ओर भागते हैं, क्योंकि भाग निकलने का वही एक मार्ग है। नेपथ्य में कोलाहल होता है। डाकुओं के भाग जानेपर गाँव वाले बालाराम और चांदखां के मकानों के सामने जमा होते हैं। पीछे से लड़खड़ाते हुए पैरों पुलिस के वे पाँचों सिपाही आते हैं। सोमेश्वर और चांदखां भीड़ के सामने आ जाते हैं।

सोमेश्वर—तुम लोग कहां थे? क्या सिपाहियों का यही कर्तव्य होता है!

चांदखां—कहां सो रहे थे तुम लोग?

जमादार—कहां गए हैं ए, वे लोग?

गाँव वाले—नाले की ओर।

जमादार—हम देखते हैं।

(सिपाहियों का प्रस्थान)

चांदखां—चलो हम लोग भी पीछा करें।

सोमेश्वर—चलो।

(इसी समय गांव के पास बन्दूक वाले भी आ जाते हैं।)

[illegible]

(बालाराम बाहर आता है)

बालाराम—[illegible]

बालाराम—(घबराहट के साथ) हा चन्दू भैया, बच गए।

सोमेश्वर—सब कुशल से हैं? कुछ माल तो नहीं ले जा पाए वे लोग?

बालाराम—नहीं भैया। हम लोग सब बच गए।

(सबका प्रस्थान)

[चांदनी कभी छिप जाती है, कभी उधर जाता है। एक दरवाजे पर गाल निगारे चम्पा का प्रवेश और दूसरे पर करीमन का]

करीमन - (आतुरता के साथ) बहिन चम्पी कुशल है?

चम्पा—(हर्षित स्वर में) हां बहिन और तुम भी बच गई न?

करीमन—हां भीतर, आओ।

[बालाराम भीतर जाता है। चांदनी और बालाराम के [illegible]]

सातवाँ दृश्य

मेघराज—मार दो, मार दो। जितनी खुशी मुझको मरने में हो रही है, उतनी तुमको मेरे मारने में नहीं मिलेगी।

सरदार—बेईमान, उस लड़की के प्रेम ने तुझको भ्रष्ट किया और हम सबका सत्यानाश।

मेघराज—खबरदार सनीचर, जो इस प्रकार की बात बकी। मैं भले मां बाप का लड़का हूँ। मेरी मौज ने मुझको सपेरा और अवारा बनाया, परन्तु वह मौज बहिन को पहिचानने और बचाने से नहीं रोक सकी।

सरदार—बहिन! वह छोकरी तेरी बहिन?

मेघराज—हां, राखी की दी हुई बहिन।

सरदार—मूर्ख! गधा!

एक डाकू—सरदार जरा सी चिलम पीलें? बड़ी देर से नहीं पी है। इधर हम लोगों ने चिलम का सर्राटा खींचा, उधर इसकी गर्दन पर तलवार खिंचा और इसकी गर्दन को नाले में फेंककर हम लोग जङ्गल में चल दिए।

सरदार—जल्दी करो। इसके केशों को डाल से मजबूती के साथ बांध देना जिससे गर्दन हिलने न पाए।

[कुछ लोग मेघराज को इसी तरह जकड़कर बांध देते हैं। तत्पश्चात् चकमक से आग तैयार कर वे सब तम्बाकू पीते हैं। आग की लौ को पार्श्व निवासी देख लेते हैं और बन्दूकें चलाते हुए वे भागे आते हैं और चिल्लाते हुए दौड़ते हैं। डाकुओं के पास से

आठवाँ दृश्य

[स्थान—खासी बस्ती के बीच की सड़क। बालाराम के मकान के सामने बस्ती वाले मेघराज को लेकर आते हैं।]

सोमेश्वर—यहीं ठहरा दो। देखें यहाँ सब कुशल है। आतुरता में हम लोगों ने उस समय पूरा हाल नहीं पूछ पाया और डाकुओं के पीछे दौड़े गए।

चौकसों—यदि डाकुओं ने आगी न जलाई होती तो यह बिचारा भी निस्सन्देह मारा जाता। इसको ये बाँध तो चुके ही थे। नाथ, पानी पियोगे? तुम्हारा नाम क्या है भाई?

मेघराज—(क्षीण स्वर में) पानी पिऊँगा। नाम मेरा मेघराज है।

[चम्पा और वनीमन अपने अपने दरवाजों पर आ जाती हैं और बालाराम आते हैं]

चम्पा—मैं पानी लाती हूँ।

(चम्पा पानी लेकर आती है)

सोमेश्वर—अब कुशल है? सब बच गए न?

बालाराम—हाँ भैया।

[मेघराज को पौर में चारपाई और साफ सुथरे बिस्तरों में लिटा दिया जाता है। चम्पा उसको पानी पिलाती है। पौर में लालटेन का प्रकाश हो रहा है। चम्पा उस प्रकाश में मेघराज को अच्छी तरह पहिचान लेती है। मेघराज कुछ कहना चाहता है, परन्तु चम्पा एक सूक्ष्म संकेत द्वारा उसको चुप पड़े रहने के लिए समझा देती है। वह प्रसन्न है और उत्तेजित है। कुछ गाँव वाले पौर में हैं, बाकी अनेक बाहर सड़क पर।]

आत्माराम—उन डाकुओं में एक भला मानस भी था। उसी की कृपा से बचे। कोई भी हानि नहीं हो पाई।

चम्पा—(ज़रा तीखे स्वर में) दादा, कृपा तो चन्दू दादा की और इन सब भले वालों की है जो ठीक समय पर आ गए। कोई भी डाकू भला क्या बचाता?

आत्माराम—(मेघराज को निकट से देखकर) ऐं चम्पी

चम्पा—इन सब जनों का पान तमाखू पानी दीजिए। नौकर त्योहार के कारण अपने अपने घर चले गए हैं। मैं बाहर नहीं निकल सकूँगी। आप इन सब का आदर कीजिए। जाइए।

आत्माराम—(दबे हुए आश्चर्य के साथ) इस विचार को कहां से देखा? तुम कहना चाहते हो। कहां लगी?

चांदखां—आप अब भी घबराए हुए हैं। अब यहां डाकू वाकू कुछ नहीं।

बालाराम—(माथे का पसीना पोंछकर) मैं पान तमाखू का प्रबंध करता हूं।

(बालाराम भीतर जाता है)

(पौर से आए हुए गांव वाले और चांदखां बाहर सड़क पर आ जाते हैं)

[illegible]नन—(अपने दरवाजे पर से) जब चन्द्र दादा चमरा के घर में डाकुओं पर पिल पड़े, तब कुछ डाकू हमारे घर में आ घुसे थे, पर सोमू [illegible] ने एक लाठी भाजी कि दो को चित कर दिया और बाकी को भगा दिया।

मेघराज—मैं कब तक चंगा हो जाऊँगा ?

चम्पा—शीघ्र।

(उसी स्थान पर करीमन आ जाती है)

करीमन—क्या तुमको डाकुओं ने सन्ध्या से ही पकड़ लिया था ? क्यों पकड़ लिया था उन लोगों ने ?

मेघराज—बतलाऊंगा कभी। अभी तो थकावट मालूम होती है।

चम्पा—करीमन, इनको शांत पड़ा रहने दो।

मेघराज—मैं तुम दोनों बहिनों का अहसान मानता हूँ।

करीमन—अब सो जाओ।

मेघराज—अभी नींद नहीं आ रही है। सोचता हूं आगे क्या करूँगा।

(सोमेश्वर निकट आ जाता है और चम्पा को जरा गहरी दृष्टि से देखकर मेघराज को देखने लगता है)

सोमेश्वर—आगे क्या करोगे, इसको अभी मत सोचो। बिलकुल स्वस्थ होने पर सोचना।

मेघराज—(उत्तेजित होकर) मैं छुटपन से ही आवारा हो गया। साँप, बन्दर, कीड़े मकोड़े न जाने क्या क्या जंजाल अपने जीवन के अंग बन गए। पैसे वाले और भले मा बाप को छोड़कर देशाटन के लिए सपेरा बनकर निकल पड़ा। अब न सपेरा रहूँगा और न घर लौट कर जाऊँगा। यदि आपके गाँव में मजदूरी मिल गई तो यहीं

कैसे ग्रहण करूँगा? अभी तो, बहिन, राखी की दक्षिणा का ही ऋण मेरे सिर पर है।

चम्पा—मिल तो.. (यकायक चुप हो जाती है)...मिल जायगी।

(लालाराम मेघराज की चारपाई के पास आता है)

लालाराम—डाकू भाग कर कहां गये होंगे?

चम्पा—(रूखे स्वर में) इनको क्या मालूम? आप भी खूब हैं दादा।

भीड़ में एक ग्रामीण—ये डाकू घुसे कहां होकर थे?

लालाराम—क्या मालूम, हम लोग तो दिन भर के थके मांदे होने के कारण सो रहे थे। जब जागे, इन लोगों को बन्दूक लिए छाती पर चढ़ा पाया।

सोमेश्वर—मैं बना रहूँ ? सब लोग सो जाना, मैं जागता रहूँगा मेघराज की देख भाल भी करता रहूँगा।

मेघराज—कोई मेरा कष्ट न करे। मैं बहुत चैन में हूँ। नरक से स्वर्ग में आया हूँ।

चम्पा—(बालाराम से) दादा, किसी की भी तो आवश्यकता नहीं अब।

बालाराम—हां भैया सोमू जाओ तुम भी।

[एक व्याकुल दृष्टि से चम्पा को देखकर सोमेश्वर जाता है। करीमन, चांदला और अन्य ग्रामीण निवासी तथा सिपाही भी जाते हैं।]

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—बम्बई। सड़क पर बालाराम का घर। पौर के पास वाले एक कमरे में मेघराज पड़ा है। अच्छा हो रहा है, परन्तु बिलकुल स्वस्थ नहीं हुआ है। दरवाजा खुला हुआ है। [illegible] भीतर से पौर में आता है। समय दोपहर के पहले।]

बालाराम—चम्पी, ओ चम्पी।

(नेपथ्य से)—आई।

(चम्पा पौर में आती है)

चम्पा—नहीं दादा, वह मेरा भाई है। अस्पताल में उसकी सुश्रूषा नहीं हो सकेगी। आप चिन्ता न करें, मुझको उसकी सेवा बोझ नहीं जान पड़ती।

बालाराम—परन्तु उसका यहां रखना बिलकुल ठीक नहीं।

चम्पा—आपने थानेदार से क्या कहा था?

बालाराम—और कुछ नहीं कहा। तुम मुझको ठीक-ठीक बतलाओ। तुमने यह सब क्या कहा था—भैया! राखी की लाज! अपनी बहिन को बचाओ!

चम्पा—मैंने तो कुछ नहीं कहा था। मैं बहुत डरी हुई थी।

बालाराम—मैं भी बहुत भयभीत था, परन्तु वे शब्द मुझको याद हैं। मुझसे मत छिपाओ ठीक ठीक बतलाओ। डाकुओं से अपने को [illegible] था न? तुमने किस दिन इसको राखी बांधी थी?

चम्पा—न, बिलकुल गलत। कल राखी का दिन था। उसी की [illegible] होगा और [illegible] जानकर उससे रक्षा की [illegible] होगी।

चम्पा—ठीक ठीक स्मरण नहीं।

थानेदार—तो भी जितनी सुध हो उतना ही बतलाओ।

चम्पा—मैं बहुत घबरा गई थी। मैंने हाथ जोड़कर कहा था कि मैं तुम्हारी धर्म की बहिन हूँ, रक्षा करो—और कुछ याद नहीं आता।

थानेदार—तुमने सावन के दिन इस बीमार को राखी बाँधी थी?

चम्पा—अवश्य।

थानेदार—और इसको कजलिया दी थी?

चम्पा—(कण्ठ को नियन्त्रित करके दृढ़ता के साथ) जी हाँ।

थानेदार—क्यों? इसको भाई क्यों बनाया था?

चम्पा—क्योंकि इसने एक दिन पहले जादू के खेल दिखलाये थे। मुझे अच्छा लगा, मैंने इसको अपना भाई बना लिया।

थानेदार—और रात को डाकुओं के साथ यही 'भाई' आया और तुमको पहिचान कर फिर इसने डाका नहीं पड़ने दिया। और इसीलिए इसको डाकुओं ने, बाद को, पकड़कर मार डालना चाहा! यही है न!

चम्पा—(संभलकर) मुझको क्या मालूम! परन्तु, मैं निश्चय के साथ कह सकती हूँ कि उस रात डाकुओं में यह न था।

थानेदार—आपने तो कुछ और कहा था। खैर, मैंने सुना है उस दिन सिपाहियों ने भङ्ग पी थी या उनको पिलाई गई थी?

चम्पा—(जल्दी से) जब वे लोग बस्ती वालों के साथ रक्षा के लिए और डाकुओं को पकड़वाने के लिए हमारे घर पर आए तब तो नशे में नहीं जान पड़ते थे।

थानेदार—बस्ती वाले तो कहते हैं कि वे भङ्ग पिए हुए से थे।

लालाराम—आपने सिपाहियों से नहीं पूछा? वे क्या कहते हैं?

थानेदार—देखा जायगा। पहले एक बात साफ कर लेना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि यह बीमार, चाहे डाकुओं में रहा हो या न रहा हो, उस दिन एक सपेरे के साथ देखा गया था। उस सपेरे ने सिपाहियों को भङ्ग पिलाई थी। मैं इस बीमार को देखना चाहता हूँ।

चम्पा—देख लीजिये। वह अच्छी तरह बात ही नहीं कर सकता।

[मेघराज इस संकेत को सुन लेता है, थानेदार भीतर जाता है और वहाँ खिड़की खोलता है। चारपाई पर पड़ा हुआ मेघराज [illegible] पलटता है उस पर पट्टियाँ अब भी चढ़ी हुई हैं]

थानेदार—डाक्टर साहब कहते थे कि तुम बोलचाल करने योग्य हो, [illegible] कुछ पूछना चाहता हूँ जवाब दो।

मेघराज—(थके हुए धीमे और टूटे हुए स्वर में) हूँ [illegible]
[illegible] ..

बालाराम—डाकुओं का कुछ पता लगा थानेदार साहब ?

थानेदार—पता कैसे लगे ! आप लोग सच सच बतलावें, ठिकाने की बातें करें तो कुछ सूत हाथ पड़े परन्तु आपका कुछ गया नहीं, इस-लिए आपकी लड़की ओर आप साफ साफ नहीं बतलाते। आप भी तो कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ। मैं दो एक दिन में इन सिपाहियों को लेकर फिर आऊँगा। इस समय वे लोग एक काम से बाहर गए हैं। आपकी गाँव-पञ्चायत को हिदायत किए जाता हूँ कि इस बीमार पर नजर रखे।

(पिछवाड़े से रोने का शब्द आता है)

थानेदार—(उपेक्षा से) यह क्या है ?

बालाराम—(सहानुभूति के साथ) गाँव में [illegible] की [illegible] है। [illegible] बुढ़िया बीमार हो गई थी। जान पड़ता है कि मर गई।

थानेदार—हैजा ! गाँव पञ्चायत ने कोई प्रबन्ध नहीं किया !

बालाराम—शुरू ही तो हुआ है।

चम्पा—कई मनुष्य कल रात से एकाएक बीमार पड़ गए हैं।

थानेदार—डाक्टर साहब क्या कर रहे हैं ?

बालाराम—मालूम नहीं साहब।

थानेदार—अच्छा, मैं फिर आऊँगा।

प्रत्येक मरीज को अलग अलग ही देख सकूँगा, एक साथ तो देख नहीं सकता।

पादरी—खिलाने पिलाने की दवा तो है आपके अस्पताल में!

डाक्टर—है तो परन्तु सारी बस्ती के लिए थोड़े ही है। दूसरे हर मरीज के पास बार बार दवा देने तो मैं जा नहीं सकता।

घबराए हुए आगन्तुक—(एक साथ) चलिए डाक्टर साहब, चलिए, देर हो रही है।

पादरी—(शान्त होकर) आप चलिए। हम लोग मरीजों के पास बारी बारी से सेवा के लिए रहेंगे। आपको भटकना नहीं पड़ेगा।

(डाक्टर का इन आगन्तुकों के साथ प्रस्थान)

लोकेश्वर—डाक्टरों में क्या कुछ मानवता न होनी चाहिए!

तुझे क्या जानता नहीं ? डरतो तुझसे कोसों दूर भागता है पठे । दर्द वर्द नर्म: ठीक हुआ जाता है ।

[चारुखा उसको दवा देता है । वह खालेता है । वे दोनों अन्य-युवकों के पीछे पीछे चले जाते हैं ।]

तीसरा दृश्य

[स्थान — बस्ती । समय उसी दिन दोपहर के लगभग । चम्पा दरवाजा खोलकर बाहर आती है]

चम्पा — करीमन, ओ करीमन क्या कर रही हो ?

करीमन — (भीतर से) — आई !

(करीमन अपना दरवाजा खोलकर आती है)

करीमन — पानी के लिए निकल पड़ी चम्पा ? बस्ती के भीतर या [illegible]

करीमन—मेरी सौगन्ध खाओ कि ठीक ठीक बतलाओगी।

चम्पा—तुम्हारी सौगन्ध तो न खाऊँगी। अपनी खाती हूँ। पूछो।

(चम्पा सांस साधकर सन्देह की दृष्टि से करीमन को देखती है)

करीमन—अच्छा, कोई सौगन्ध मत खाओ। तुमने सावन के दिन सोनू दादा को राखी क्यों नहीं बाँधी। कजरिया भी क्यों नहीं दी?

चम्पा—(झेंप को मुस्कराहट में बदलकर) मेघराज को देखकर ऐसा लगा कि इसे भाई बनालूँ, फिर और किसी का ध्यान ही नहीं रहा। सोनू दादा को मैंने राखी बाँधी थी। कजरिया भी दी थी।

करीमन—तब सोनू दादा के साथ [illegible] क्यों नहीं किया? जब मैंने पूछा था तो तुमने टालटूल दिया था। अच्छा, [illegible] सोनू दा [illegible] क्यों चिंतित रही थीं। मैं सब जान रही थी।

चम्पा—यही जानती हो न?

करीमन—मुझको भी यह काम अच्छा लगेगा। पर वह मेहराज भाई क्या भीतर अकेला पड़ा रहेगा?

चम्पा—(धीरे से) वह तो लगभग अच्छा है, परन्तु मैं उसको पुलिस वालों के सामने इस समय नहीं करना चाहती। वे उसको व्यर्थ हैरान करेंगे।

करीमन—हां, ठीक है। परन्तु सन्देह बस्ती में लगभग सबको है कि डाकुओं में भाग लेने वाला डाकू यही है।

(नादरा का दौड़ते हुए प्रवेश)

नादरा—करीमन, करीमन, जल्दी से प्याज काट कर रस निचोड़ और [illegible] थोड़ी सी हींग घोलकर कांच की प्याली में दे।

करीमन—अभी लो दूं। क्या है दादा?

नादरा—हैजा एकदम प्रचण्डता के साथ फैल रहा है। अस्पताल [illegible] माधू को हैजा हो गया है। बीमारों की सेवा करते करते [illegible] गया है। जल्दी कर।

बालाराम—जो कुछ हमको मालूम था, पहले ही बतला दिया। अब कुछ बाकी रह गया हो तो पूछिए, बतलाने को तैयार हूँ।

थानेदार—(गम्भीरता पूर्वक) आपकी लड़की छिपा रहे हैं। आपको साफ़ साफ़ बतलाना चाहिए। बतलाना पड़ेगा। मेघराज सपेरा अब तो बिलकुल अच्छा हो गया है। बुलाइए कहाँ है। उसका बयान लेना है।

बालाराम—खाना खाने के बाद कुछ पढ़ने लगा था। बुलवाता हूँ।

(नौकर से बुलवाता है। मेघराज का प्रवेश)

थानेदार—(मेघराज को ऊपर से नीचे देखकर) तुम कहाँ के रहने वाले हो? सपेरे कब से हुए? सावन के दिन तुमको गाँव में किसने [illegible] गया? कजलियों के मेले के समय तुम्हारे साथ दूसरा सपेरा कौन था? उसी मेले में, तुमने या तुम्हारे साथी ने पुलिस के पाँच सिपाहियों को भंग पिलाकर बेहोश किया? तुमको डाकुओं ने पकड़ कर [illegible] क्या था? इन सवालों का जवाब दो।

(चम्पा किवाड़ों की आड़ में आ जाती है)

अकेले में कहा कि पेड़ों की इस झुरमुट के पास पानी अच्छा और शुद्ध है मुझको यहीं आकर नहाना चाहिए।

सोमेश्वर—मैंने ही कहलवाया था। वे मेरे बड़े मित्र हो गए हैं, इस समय वे पहरेदार बनकर पुल पर बैठे हैं, किसी को यहां न आने देंगे।

चम्पा—अर्थात यदि कोई यहाँ आना चाहेगा तो उसको वहीं रोककर बिठला लेंगे!

सोमेश्वर—(मुस्कराकर) मेघराज जादूगर हैं जादूगर। जादू के बल से आने वाले को भुलावे में डाल देंगे।

चम्पा—(कुछ उदास होकर) तो उनको भी सब हाल मालूम हो गया है?

सोमेश्वर—बुरा ही क्या हुआ? मुझको उनकी आस्था से बड़ा सहारा मिला है।

चम्पा—(कांपते गले से) तुमने अच्छा नहीं किया। मैं उनको अपना बड़ा भाई मानती हूं। उनसे तुम्हें कुछ नहीं कहना चाहिए था।

सोमेश्वर—(अनुनय के साथ) सोचो, मैं करता ही क्या? किस प्रकार तुम्हारे पास अपना सदेसा भेजता?

चम्पा—चिट्ठी भेज सकते थे।

सोमेश्वर—किसके हाथ भेजता? डाक से भेजना तो दादा के हाथ में पड़ जाती। मैं तो चाहता हूँ कि उनको साफ साफ मालूम हो जाय, परन्तु तुम्हारे भय के मारे मैं चिट्ठी का साधन काम में नहीं लाया इसके सिवाय और कुछ भी नहीं कर सकता था।

चम्पा—अब जो हुआ सो हुआ। आगे समझकर चलना। बहुत बातें हो गईं। अब तुम जाओ मैं नहाऊँगी। देर हो जायगी तो दादा कुछ कह बैठेंगे।

सोमेश्वर—मेघराज के साथ चली जाना।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान ग्रामी के मध्य की सड़क पर बालाराम का घर दरवाजे खुले हुए हैं। सड़क पर और अगल बगल चहलपहल है घर के सामने एक कुर्सी पर बालाराम बैठा हुआ है, दूसरी पर मेघराज। बालाराम हुक्का पी रहा है। समय सूर्यास्त के पहले]

मेघराज—दादा, तीसरे दिन जवारे निकलेंगे। बहुत अच्छे जमे हैं। रंग सोने का सा है, अबकी साल चैत की फसल अच्छी होने के लक्षण हैं।

बालाराम—हूँ—हा। कातिक की फसल भी अच्छी आ रही है।

मेघराज—कजरिया नये सोने के रंग की खोंटी गई थीं। दादा, एक विनती है।

बालाराम—कहो, तुम्हारे मुकद्दमे में पुलिस की अन्तिम रिपोर्ट अभी नहीं आई? दिन तो बहुत हो गए हैं।

मेघराज—वह तो दादा ग्राम-पञ्चायत की मार्फत आ जायगी।

बालाराम—मुकद्दमा चल ही नहीं सकेगा।

मेघराज—मैं उसके सम्बन्ध में विनती नहीं कर रहा था।

बालाराम—(हुक्का मुँह से हटाकर) तब और क्या बात है?

मेघराज—बंदिन के विषय में कुछ कहना चाहता हूँ।

मेघराज—सोमेश्वर बहुत स्वस्थ, पढ़े लिखे, सुन्दर और शीलवान हैं दादा, आपको इस सम्बन्ध पर कभी नहीं पछताना पड़ेगा।

बालाराम—सोचूंगा। जवारे आजसे तीसरे दिन निकलेंगे?—हां। अच्छा मेघराज, कोई अनहोनी तो नहीं हो गई है? सच सच बतलाना।

मेघराज— मैं झूठ नहीं बोलूंगा और फिर बहिन के सम्बन्ध में झूठ मुझको नरक में भी ठौर नहीं मिलेगा। दादा सच मानिए मेरी बहिन हीरा सी है और सोमेश्वर मोती सा स्वच्छ और आबदार है। परन्तु यह सम्बन्ध हो जाना चाहिए। दोनों आजन्म सुखी रहेंगे। विश्वास करिए।

बालाराम—मैं दशहरे के बाद अपना निश्चय बतलाऊँगा। इस बीच में मुझको एक जगह बाहर जाना है।

(सोमेश्वर का प्रवेश। मेघराज कुर्सी छोड़ देता है)

मेघराज—आइए भाई सोमेश्वर जी।

सोमेश्वर—दादा, मेघराज जी के मामले में पुलिस की अन्तिम रिपोर्ट पञ्च भवन में अभी अभी आई है। कोई भी प्रमाण इनके विरुद्ध न होने के कारण मामला नहीं चलाया जायगा। मुझको और चौदस्यों को भी सूचना दी गई है कि जमानत काट दी गई और मेघराज जी को छोड़ दिया गया।

(मेघराज सोमेश्वर को हाथ जोड़कर प्रणाम करता है और बालाराम के पैर छूता है)

मेघराज—आपका आशीर्वाद है, दादा। बहिन को सम्वाद सुना आऊँ। (भीतर जाता है)

बालाराम—बैठो सोनू। (सोमेश्वर कुर्सी पर बैठ जाता है)

सोमेश्वर—दादा हम लोगों ने अपने सेवादल को खूब सङ्गठित किया है। सरकार से बन्दूकें भी मिलेंगी। हम लोग कवायद परेड सीखेंगे। सब लोगों के, खास तौर पर युवकों के, जीवन में नियम तरतीब

अनुशासन आयगा और फिर हम लोग आसानी के साथ डाकुओं और अंग्रेजों का सामना कर सकेंगे और गांव की उन्नति के किसी भी काम को दृढ़ता पूर्वक बढ़ा सकेंगे।

बालाराम—ठीक है। यदि रुपए की जरूरत पड़े तो मैं देने में आगा पीछा न सोचूँगा।

सोमेश्वर—(उठते हुए) सो तो आपसे गांव भर को आशा है। मैं यही कहने आया था।

बालाराम—जरा बैठो। कितना रुपया चाहना पड़ेगा? कुछ अनुमान कर सकते हो?

सोमेश्वर—अभी तो दादा, कुछ नहीं कह सकता। समय आने पर विनय करूँगा।

बालाराम—आनन्द का एक अवसर आने वाला है। चम्पी की सगाई और फलदान होने वाला है। उस मौके पर और व्याह पर बहुत कुछ देना चाहता हूँ।

(सोमेश्वर के चेहरे पर यकायक उतार चढ़ाव होता है। उसका गला रुँध जाता है)

सोमेश्वर—(कुर्सी के डंडे पर थमकर, सिर नीचा किए हुए) जी दादा?

बालाराम—हां, ललितपुर में सम्बन्ध हो रहा है।

(सोमेश्वर कुर्सी के डंडे को हाथ के नाखून से कुरेदता है)

सोमेश्वर—जी दादा?

बालाराम—घर बड़ा है। लड़का अच्छा है।

(सोमेश्वर सिर नीचा किए खड़ा है)

बालाराम—हां बिलकुल।

सोमेश्वर—आपने निश्चय कर लिया?

बालाराम—हां, बिलकुल।

सोमेश्वर—तब मुझको कहना ही क्या है?

(सोमेश्वर नीचा सिर किए हुए चला जाता है)

(भीतर से मेघराज का प्रवेश। पीछे पीछे चम्पा आ रही है; परन्तु आड के कारण बालाराम उसको नहीं देख पाता।)

बालाराम—मेघराज, दशहरे के बाद के लिए निश्चय को नहीं टालूंगा मैं। इसी नवमी को जवारों के दिन, ललितपुर जाकर सगाई फलदान करे आता हूं। अधिक नहीं ठहरूंगा।

(चम्पा धक्का सा खाकर पीछे हट जाती है)

मेघराज—दादा, मेरे निवेदन पर आपको ध्यान देना चाहिए।

बालाराम—मैंने खूब सोच समझ लिया मेघराज। मेरा निश्चय अटल है। मैं अपनी बेटी को भुक्खड़ों के घर में नहीं फेकूंगा।

मेघराज—क्या बहिन इस सम्बन्ध से सुखी होगी?

(चम्पा 'हिश!' करके भीतर चली जाती है)

बालाराम—इस लड़की का मैं मां और बाप दोनों हूँ। मैं उसके सुख की बात को ज्यादा अच्छी तरह जानता और समझता हूँ। यह 'हिश' किसने किया?

मेघराज—चम्पी मेरे पीछे खड़ी थी। मैंने उसको देखा न था।

बालाराम—अब देख लिया तुमने कितनी आज्ञाकारिणी और समझदार है वह? यह 'हिश' उसने किसी बात पर किया?

मेघराज—(उदास स्वर में) मेरी बात पर होगा। और मैं कह ही क्या सकता हूँ!

दूसरा दृश्य

[स्थान—झाँसी गाँव की बाहर की सड़क जो नाले के पुल के लिए गई है। समय संध्या के पूर्व। स्त्रियाँ और लड़कियाँ रंग बिरंगे कपड़े पहिने सिर पर जवारे रक्खे गाती हुई चली आ रही हैं। इनके बीच में कुछ स्त्रियाँ सिर पर थालों में घी के दीपक जलाए हुए हैं। पुरुष साँगें और त्रिशूल लिए हुए उछलते कूदते उनके आगे हैं। स्त्रियों के गायन के साथ पखावज बज रही है। सारंगी वाले भी संग में हैं। लड़कों का एक अखाड़ा पीछे पीछे आ रहा है। लड़के तलवार, गदका फरी और बनैती इत्यादि का प्रदर्शन करते हुए चले आ रहे हैं। अखाड़े के साथ मेघराज हैं।]

(स्त्रियों का गीत)

कौनने पाले सैंया हरियल सुअना, कौन ने पपीहा मोर ?

बादर गरजै घनघोर,

बिजली चमके चहुँ ओर,

जेठा तपे आई [illegible]

कौन ने पाले

और वशिष्ठ बनाकर गाय और देश की रक्षा नागराज बनकर करो। गदका-फरी का खेल दिखलाओ।

(लड़के गदका-फरी का खेल दिखलाते हैं)

[यह जनसमूह धीरे धीरे तालाब की ओर जा रहा है। इस समूह के पीछे थोड़े से जंगली स्त्री-पुरुषों का स्वांग आता है। ये लोग अपना नृत्य दिखलाते हुए चले जाते हैं। उनके पीछे पढ़ी लिखी लड़कियों का एक छोटा सा समूह आता है। ये जवारों के दोने हाथ में लिए हैं। गाती चली आ रही हैं। उनमें चम्पा और करीमन भी हैं। चम्पा गा नहीं रही है। उदास है। करीमन खाली हाथ है—वह जवारे का दोना नहीं लिए है।]

(इस समूह का गीत)

कौने पाले मैया · · · · इत्यादि

(यह समूह भी तालाब की ओर चला जाता है)

तीसरा दृश्य

[स्थान—चाँमी के तालाब का बंध। समय—सूर्यास्त। स्त्रियां जल में जवारे सिरा रही हैं। जवारे खोट खोटकर गरी और बताशे के साथ स्त्री-पुरुष परस्पर बाँट रहे हैं—जवारों के लिए कजरियों का बन्धन नहीं है कि वे केवल भाई को ही दिए जायँ। सब लोगों के चले जाने पर एक कोने से चम्पा और करीमन का हाथ में जवारे लिए हुए प्रवेश।]

चम्पा—मैं सोचती थी कि यदि कहीं मिल जाते तो उनको जवारे देकर फिर तालाब में यहीं कहीं गरक जाती।

करीमन—यह सब नासमझी की बात है।

चम्पा—करीमन, आज दादा मेरे भाग्य का निर्णय करने ललितपुर

करीमन—सँभलो चम्पी, यह देश इसलिए स्वतंत्र नहीं हुआ है कि इसकी लड़कियाँ, इसकी कलियाँ, यों ही जलकर खाक हो जायँ। मैं देखती हूँ कैसे उस ललितपूर वाले कोढ़ी पर तुमको कुरबान किया जाता है।

चम्पा—क्या करोगी बहिन, तुम ?

करीमन - इस गाँव के अलख को जगाऊँगी। बस्ती की आत्मा को चेताऊँगी।

चम्पा—(निराशा के स्वर में) कैसे ?

करीमन—तुमको कुएँ में ढकेल कर।

चम्पा—(फीकी मुस्कराहट के साथ) यहीं न ढकेल दो इसी तालाब में ?

करीमन - चल यहाँ से। पढ़ना-लिखना, सेवादल सब चूल्हे में डाल दिया डायन ने। चन्दू भैया से कहती हूँ। पञ्च-भवन आजाद हिन्दुस्तान की लड़की की पुकार से गूँज उठेगा। लड़के उस आवाज़ को पकड़ेंगे और अपने गले से नीचे उतारेंगे। परमात्मा के दिए हुए प्राण यों ही नहीं गंदे जा सकते। चल।

(पकड़ कर चम्पा को ले जाती है)

चौथा दृश्य

[स्थान—ग्रामी बस्ती के बीच वाली सड़क के पुल की ओर जाने वाला सिरा। उस सिरे से कुछ बालकों और युवकों का गाते हुए प्रवेश। पीछे पीछे चाँदनी और मेघराज। समय प्रभात। ये सब लोग नाले में स्नान करके बस्ती की ओर आ रहे हैं]

(लड़कों का गायन)

गई रात आया प्रभात ।
हुआ झंकरित भू का कन कन ।
बोल रहा है खननन झननन ।
अब न होयगे कभी दास ।
गई रात आया प्रभात ।

(यह समाज गाता हुआ गाँव मे जाता है)

पांचवां दृश्य

[स्थान—बस्ती के बीच वाली सड़क। सड़क के ऊपर बालाराम इत्यादि के मकान। जलूस का गाते गाते प्रवेश। जलूस बालाराम के घर के सामने ठहर जाता है। करीमन निराले स्थान पर अपने दरवाजे पर खड़ी हो जाती है और बालाराम अपनी खिड़की खोलता है। चांदखां और मेघराज आड़ मे छिप जाते है। समय वही प्रभात]

बालाराम—क्या रे छोकरा, यह क्या हुल्लड़ मचा रक्खा है? इतने सवेरे यहां क्या खड़े हुए हो?

एक लड़का—(आगे बढ़कर) दादा, हम हुल्लड़ नहीं है, स्वतन्—

बालाराम—(मुस्कराकर) क्या बकता है रे ? बोल क्या चाहिए ?

वही लड़का—हम लोगों की बहिन चम्पा का ब्याह उस ललितपूर वाले कोढ़ी के साथ मत करिए !

बालाराम—क्या ! कोढ़ी !!

वही लड़का—बिलकुल कोढ़ी, दादा ! ऊपर चाहे जैसा हो भीतर भीतर वह हम लोगों के लिए कोढ़ी ही है ।

बालाराम—(क्रुध स्वर मे) क्या बकते हो मूर्खों ?

(मेघराज आड से करीमन को सकेत करता है । करीमन बालाराम के द्वार पर आती है)

करीमन—दादा, किवाड़ खोलिए । मुझे कुछ कहना है (लड़कों से) तुम लोग जाओ ।

(लड़के चादरां और मेघराज का सकेत पाकर गाते गाते एक ओर जाते हैं । बालाराम किवाड़ खोल देता है । करीमन उसकी पोर मे चली जाती है)

करीमन—मै आपको पिता के समान समझती हूँ । आपकी गोदी मे खेली हूँ, इसलिए मुझको कुछ कहने का और मागने का हक है ।

बालाराम—तू क्या मागने आई है करीमन ?

करीमन—केवल एक भीख—ललितपूर वाले लड़के की सगाई छोड़ दीजिए ।

बालाराम—मै वचन दे चुका हूँ, बेटी । जाति मे मेरी बहुत हेटी होगी । मुह न दिखला सकूंगा । लोग मेरे ऊपर थूकेंगे ।

करीमन—जाति वाले कुछ नहीं कहेंगे, दादा । गाव के सजातीय लड़के के साथ ही तो सम्बन्ध होना है ।

बालाराम—मै जान जा तो ऐसा नहीं कर सकता करीमन । अपनी बात कैसे बिगाड़ूं ?

करीमन—तो आप मेरी बहिन चम्पी को मार डालना चाहते हैं? मोहन भैया गरीब हैं तो क्या हुआ? उनके पास हाथ पैर बुद्धि तो है।

बालाराम—करीमन, तू अभी निरी बच्ची है। नादान है। समाज को नहीं जानती है और न ससार को।

(मेघराज का यकायक प्रवेश)

मेघराज—मैं तो जानता हूँ, दादा समाज को और संसार को। यदि आप मेरी इस बहिन को भीख नहीं देते हैं तो मुझको [illegible]

बालाराम—यह सब क्या षड्यन्त्र है?

(पीछे एक कोने में चम्पा सिसक रही है)

मेघराज—मैं भीख नहीं मांगता। मैं तो अपना [illegible]

बालाराम—(चम्पा के सिसकने की ओर [illegible]) [illegible] क्या?

बालाराम—(अचरज और भय के साथ) कैसे ? क्या ?

मेघराज—ऐसे—बामी के भीतर गया हुआ साप और मेघराज सपेरा फिर बाहर निकलेगा और वह देखेगा कैसे कोई उसकी बहिन को उसकी इच्छा के खिलाफ ब्याह किए जाता है?

बालाराम—(सोचते हुए) क्या करूँ समझ मे नही आता।

मेघराज—आपको दादा कुछ नही दिखलाई पड रहा है ? (जरा ऊँचे स्वर मे) कुछ नही सुनाई पड रहा है ?

बालाराम—(निश्चय के स्वर मे) अच्छा बोलो कि किस तरह ये झझट कटे ?

मेघराज—अभी ललितपुर वाले को चिट्ठी लिखिए कि सम्बन्ध आगे नही चल सकेगा, तोड दिया गया। मै दौड कर डाकघर जाता हूँ और बबे मे चिट्ठी डाले आता हूँ।

(बालाराम कुछ सोचने के उपरान्त चिट्ठी लिखता है)

मेघराज—जो कुछ उन लोगों का खर्च पडा हो उसके देने की भी बात लिख दीजिए।

बालाराम—(चिट्ठी लिखने के बाद) मेरा भी तो खर्च हुआ है।

करीमन—लिख दीजिए, दादा। झझट नही बढेगा।

बालाराम—एक बात तेरी भी मानूँगा करीमन।

(लिखता है और लिफाफे पर पता लिखकर उसमे चिट्ठी को बन्द कर देता है)

करीमन—दादा, मैने अपनी भीख पाली।

मेघराज—(चिट्ठी जल्दी मे लेकर और पता पढ कर) और मैने अपना दावा पा लिया।

(चाँदनी का प्रवेश)

चाँदनी—मैने भी सुन लिया दादा। आपने बहुत अच्छा किया। आ, बढे हैं।

(करामन भीतर चली जाती है)

बालाराम—(मुस्कराकर) अरे चन्दुआ, चन्दुआ, तुझमें बड़े गुन हैं।

चांदखां—(नीचा सिर करके मुस्कराता हुआ) मैंने क्या किया दादा?

बालाराम—यह प्रभात फेरी तेरी ही रचना है खैर जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ। मेरे कोई लड़का नहीं है। मैं सोमू को ही लड़का समझूंगा। मुझको भ्रम था, वह साफ हो गया है। जाओ मेघराज, खड़े क्यों हो? डाकघर में चिट्ठी डाल आओ।

(मेघराज जाता है)

चांदखां—दादा, आपने अपनी ज़िन्दगी में जितने बड़े काम किए हैं उनमें सबसे बड़ा यही होगा।

बालाराम—चन्दू मैं बापी की मा भी हूं।

छठवाँ दृश्य

[स्थान बस्ती के आगे नाले का पुल। एक ओर से एक वृद्ध पथिक का प्रवेश और दूसरी ओर से चांदखां तथा सोमेश्वर का। पर पथिक नाले की ओर जाता है। समय एक पहर दिन चढ़े उपरान्त]

चांदखा—मैं दौलत को बड़ा भारी अभिशाप समझता हूँ सोमू। यह पञ्च-भवन, वह सहयोग समिति ग्राम सगठन, सेवादल और एक दूसरे का परस्पर घना परिचय शहरों में कहा मिलेगा? जो तन्त्र हमको गाव में अपना एक छोटा सा राज देता है वह हमको शहरों में क्या दे सकता है? और अपनी जरूरतों से अधिक रुपया कमा कर जोड़ने की हविस तो आदमी को गिराती है, उठाती नहीं है।

सोमेश्वर—तब मैं दादा का रुपया नहीं लूगा और न उनका घर जमाई बनूगा।

चॉदखा—यह आगे की बात है और परिस्थितियों के अधीन है।

(वह पथिक इन लोगो के पास आता है)

पथिक—आप लोग क्या इसी गाव के रहने वाले हैं?

सोमेश्वर—जी हा क्यों?

पथिक—आपके गाव में बड़ा अन्धेर है, बालाराम तो एक बड़े आदमी हैं न?

चादखा हा, हा। फिर?

पथिक—उन्होंने अपनी लड़की का सम्बन्ध ललितपुर मे पक्का करके फिर तोड़ दिया। यह तो बहुत अनुचित किया। ऐसा कहीं होता है?

चॉदखॉ—सब होता है और खूब होगा। लड़की की इच्छा के प्रतिकूल सगाई सम्बन्ध कैसा?

पथिक—लड़की की भी कोई इच्छा होती है?

चॉदखॉ—क्यों लड़की क्या भेड़ बकरी है?

पथिक—ललितपुर वाला मुकद्दमा लड़ेगा।

चॉदखॉ—मुकद्दमा लड़ना हम लोग भी जानते हैं। यह मुकद्दमा जायगा तो आखिर पञ्चायत ही मे न! आप कौन हैं?

पथिक—मैं लड़के वाले का कोई न कोई हू। बालाराम ने लड़के के भेदै [illegible] सम्बन्ध तोड़ा है। मामला सगीन है।

चौंदखाँ—कोठी उन्होंने तो नहीं कहा—गाव के छोकरों ने जरूर कहा। उनपर करे कोई दावा तो आटा दाल का भाव पड़े मालूम।

पथिक—खैर झगड़ा नहीं बढ़ना चाहिए। मानहानि के बदले में लड़के वाले को कुछ रुपया और मिलना चाहिए।

चौंदखां—यह बात चिट्ठी डालकर तै कर लेना, क्योंकि हमारा गाव बहुत कड़वा है। जबानी चाय चाय करने में झमेला बढ़ेगा। (मेघराज का प्रवेश) लीजिए गाव का एक बड़ा झगड़ालू तो यह आ गया।

(पथिक उसके पुष्ट शरीर को देखता है)

चौंदखां—यह डाकू है, पक्का पूरा डाकू। (हँसकर) और हम सब इसके साथी हैं।

पथिक—(सकपका कर) खैर कोई बात नहीं। तै हो जायगा—चिट्ठी डाल कर तै कर लिया जायगा। इसीलिए मैंने गाव में चर्चा नहीं की। ललितपूर जाकर तै करवा दूगा।

(प्रस्थान)

मेघराज—क्या बात थी? यह कौन था?

चौंदखां—हमको तो ललितपूर वाले छोड़े हुए लड़के का बाप सा दिखता था, फिर जो कोई हो। सगाई तोड़ने के ऊपर मामला चलाने की धमकी देता था। असल मे चाहता था उसकी ओट में कुछ और रुपया झटकना।

मेघराज—ऐसी हालत में मैं वास्तव मे डाकू हो सकता हू।

सोमेश्वर—कोई बात नहीं मेघराज भैया।

मेघराज—सायत आ गई है। उसी को बतलाने के लिए ढूढता ढूढता न यहा आ गया। परसों लगन है। मै एक बार और अन्तिम बार अपना कुछ जादू फिर दिखलाऊगा।

चौंदखां—लगुन के दिन?

मेघराज—नहीं विवाह के दिन।

चांदखां—वही, बन्दूकों वाला किस्सा दाग ?

सोमेश्वर—या कोई और चस्का ?

मेघराज—(हँसकर) नहीं, नहीं वह सब कुछ नहीं होगा।

सातवाँ दृश्य

[स्थान—शर्मी में बालाराम का सड़क पर घर। तोरण और बन्दनवारों से दरवाज़ा सजा हुआ है। समय सन्ध्या का। अच्छी रोशनी हो रही है। नेपथ्य में शहनाई बज रही है। बरात आने वाली है। दरवाजे के दोनों कोनों पर स्त्रियां पीतल के मंगल कलश सिर पर रक्खे हैं, जिन पर दिए जल रहे हैं। सामने पौर में चम्पा शृंगार किए बैठी है। उसके पास करीमन है। दरवाज़े पर जरा आगे बालाराम और चांदखां हैं। उनके पास ही नाई सजधज में खड़ा है। एक ओर से बरात आती है। आगे आगे दूल्हा वेश में सोमेश्वर, पीछे पीछे सेवा दल के लड़के।]

(स्त्रियां गाती हैं)

(राग तिलक कामोद)

कोट नवे पर्वत नवे जब साजन आए,
माथो हिमाचलजू को तब नवे जब साजन आए।
कोट नवे पर्वत नवे सिर नवन न आवे,
बालारामजू को माथो तब नवे जब साजन आवे॥

(लड़के गाते हैं)

गई रात आया प्रभात।

हुआ ज़ाहिर भू का कन कन,
बज रहा है झननन झननन,
अब न होंगे कभी दाग,
गई रात आया प्रभात।

[सोमेश्वर और बराती बालाराम के दरवाजे पर आते हैं।

बालाराम टीका करने के लिए थाल लेकर बढ़ता है। उसी समय महुअर बजाते हुए सपेरे के वेश मे मेघराज का प्रवेश। परन्तु वह पेटी या बेंगी नहीं लिए है। केवल एक कन्धे पर गेरुआ रंग का झोला डाले है। उसको देखते ही सोमेश्वर मुस्कराता है और उस मुस्कराहट मे चम्पा को देखता है। चम्पा भी मुस्करा जाती है। सोमेश्वर के बराती लडके हँस पड़ते है।]

एक लडका—गुरु जी, कोई जादू दिखलाइए, जादू गुरूजी।

नाई—अहाहा! पेटी और होती तो क्या बात थी। उस नाले के किनारे देखकर मै डर गया था और आज आनन्द के मारे काप रहा हूँ।

एक लडका—गुरु जी, जादू।

मेघराज—(महुअर बाजेको झोले मे डालकर और झोले मे से ग्यारह रुपया निकालकर) भाइयो, जादू वादू तो सब बानी मे समा गया। उसमें से केवल सपेरा निकल पाया। सपेरे का जो कुछ जादू है वह उसका प्रकाश और तुम लोग हो, और हमारे देश के भी जादू तुम्ही लोग हो। (बालाराम से) यह थाल मुझको दीजिए। मेरी बहिन का विवाह है। दूल्हा को टीका मै करूँगा।

(बालाराम गद्‌गद होकर थाल मेघराज के हाथ मे दे देता है। मेघराज थाल मे अपने ग्यारह रुपए रखकर सोमेश्वर को टीका करता है।)

मेघराज—(थाल चादखा के हाथ मे देकर, बालाराम की ओर हाथ जोड़कर) चम्पा के भाई की यह थोड़े दिन की कमाई है, दादा। आपकी राखी के बन्धन से उऋण वह कभी न हो सकेगा।

चम्पा—(कम्पित स्वर से धीरे से) मेरे भैया!

(सोमेश्वर मेघराज से लिपट जाता है, शहनाई बजती है। साथ ही धीरे धीरे यवनिका गिरती है।)

। इति ।